''संगम नगरी प्रयागराज : शिवकचेहरी व कोटेश्वर महादेव का प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''

– डॉ. नीलम त्रिपाठी एवं प्रगति शुक्ला*
असि. प्रोफेसर. समाजशास्त्र : वी.बी.जी.डी. पी.जी. कॉलेज, मैनपुर–गोण्डा
*शोधछात्रा– समाजशास्त्र : डॉ.रा.म.लो. अवध वि.वि. अयोध्या

संगम में नौका विहार करते श्रद्धालु

संगम में विचरण करते साइबेरियन पक्षी

तम्बू नगरी, संगम, प्रयागराज

प्रयागराज संगम नगरी दो पवित्र नदियों– गंगा व यमुना के संगम (जहाँ सरस्वती गुप्त रूप से मिलती हैं) तथा अपने धार्मिक स्थलों के अलंकरण व तीर्थराज के नाम से जाना जाता है। न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से भी प्रयागराज का अपना अलग महत्व है। आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ (संगम तट पर) लगने वाले पर्व महाकुम्भ (12 वर्ष) व अर्धकुम्भ (6 वर्ष) में न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण देश–विदेश से हर जाति, वर्ग, समुदाय के लोग आते हैं और पवित्र गंगा नदी में आस्था की डुबकी लगाते हैं। यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है और वर्तमान में आधुनिकता के समय में भी लोगों की आस्था में कोई परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता है। इसीलिए तो प्रयागराज, संगम को आस्था की नगरी कहा जाता है। यहाँ ठण्ड में संगम के किनारे साइबेरियन पक्षी संगम की सुन्दरता को दुगना कर देते हैं। प्रयागराज में अधिकतर मंदिर गंगा तट के समीप ही बनाये गये हैं। बरसात के महीने में माँ गंगा का पानी मंदिर में अवश्य आ जाता है। गर्मी, ठण्डी, बरसात हर मौसम में तीर्थयात्री यहाँ आते हैं परन्तु ठण्ड में माघ के महीने में संगम व गंगा में करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाते हैं।[7] पुराणों में तीर्थराज का अर्थ तीर्थों का राजा बताया गया है और वही संगम के सन्दर्भ में ऋग्वेद में यह वर्णित किया गया है कि [8]कृष्ण और स्वेत जल वाली दो सरिताओं का संगम है यहाँ। माघ महीने में कल्पवास (1 महीने कपड़े के तम्बू बनाकर जप, तप, स्नान व दान) का बहुत बड़ा महत्व है।

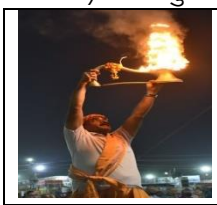

प्रयागराज संगम पर गंगा आरती करता भक्त

प्रयागराज संगम पर सामूहिक गंगा आरती करते भक्तगण

[7] मत्स्य पुराण –109 से 115.
[8] ऋग्वेद– खिल सूक्त– 10.75

संगम की गंगा आरती बहुत मनोहारी होती है। यहाँ पर सूर्यास्त के पश्चात् प्रज्वलित दीपों के द्वारा माँ गंगा का किनारा अत्यन्त रमणीय दृष्टिगत होता है। घंटे व शंख की ध्वनि से गंगा तट गूँज उठता है।

अकबर का किला

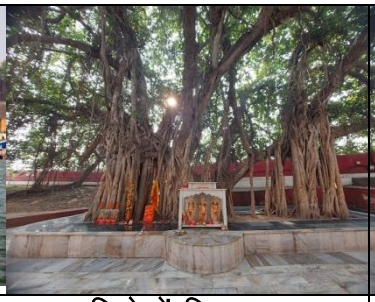

अकबर किले में स्थित अक्षयवट

बंधवा के लेटे हुए हनुमान जी

प्रयागराज अपने संगम स्थल के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। संगम से थोड़ी दूर पर यमुना नदी से लगा हुआ **किला** है। किले के अन्दर पवित्र **अक्षयवट वृक्ष** है, यही से थोड़ी दूरी पर लेटे हुए **हनुमान जी** का मंदिर है, जो बहुत प्राचीन है।

आगे बढ़ने पर **आदि शंकराचार्य** का बहुत बड़ा मंदिर है। जिसके सबसे ऊपरी छत से पूरे संगम क्षेत्र को देख सकते हैं। यह दारागंज का क्षेत्र है। आगे बढ़ने पर शास्त्री पुल आता है। उसके आगे चुंगी के आगे शक्ति पीठ माता **आलोपशंकरी** का दिव्य मंदिर है। वही गंगा के पास में प्रसिद्ध **नागवासुकी मंदिर** भी है जो बहुत प्राचीन शिव जी का मंदिर है।

आदि शंकराचार्य मंदिर

अलोपशंकरी की मंदिर

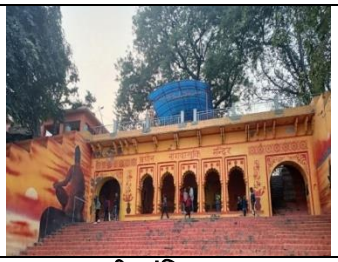

नागावासुकी मंदिर

मान्यता है कि जो संगम आता है भगवान **वेणी माधव** का दर्शन अवश्य करता है। यही संगम से शास्त्री पुल पार करने पर झूँसी के **समुद्रकूप** है। यहाँ प्रसिद्ध **भारद्वाज ऋषि का आश्रम** हैं। इसी आश्रम में बड़ा–सा पार्क है। जहाँ प्रतिदिन आने–जाने वालों की भीड़ दृष्टिगत होती है। यातायात के साधन यहाँ आसानी से उपलब्ध है जैसे–ट्रेन, रोडवेज, ई रिक्शा व अन्य साधन।

श्री वेणी माधव मंदिर, दारागंज

समुद्र कूप, झूंसी

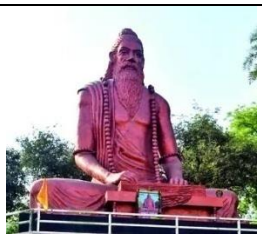

भारद्वाज ऋषि का आश्रम

मान्यता है कि यहाँ स्नान करने से मनुष्य अपने पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में स्थान प्राप्त करता है। किवदन्तियाँ हैं कि प्रजापति ने जो तीन वेदियाँ आहुति की बनायी थी– (1) कुरूक्षेत्र, (2) प्रयाग, (3) गया, इसमें मध्यम बेदी प्रयाग है। मान्यता यह भी है कि जो प्रयाग आता है इन नदियों का दर्शन व नामोच्चारण करता है, वह कई जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है। तभी तो कहा गया है–

गंगे तव दरशर्नात मुक्ति
गंगे मम ह्रदये तव भक्ति।।

[9]मत्स्य पुराण के 102 अध्याय से लेकर 106 अध्याय में इस तीर्थ का महत्व वर्णित है। जिस प्रकार ग्रहों में सूर्य, नक्षत्रों में चन्द्रमा श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सब तीर्थों में प्रयागराज सर्वोत्तम है–

ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथाशशि।
तीर्थानामुक्तं तीर्थं प्रयागण्यमनुत्तम।।– पद्मपुराण[10]

भौगोलिक परिदृश्य से जिला प्रयागराज $24^0$47 उत्तर से 25^0 उत्तर अक्षांश के बीच और $81^0$19 और $82^0$21 पूर्व देशान्तर के बीच स्थित है। यह उत्तर प्रदेश का 7वाँ सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। सामाजिक परिदृश्य से देखा जाए तो संगम नगरी प्रयागराज अपनी सांस्कृतिक उत्कृष्ट कलाओं के लिए जाना जाता है। आये दिन यहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, सांस्कृतिक सप्ताह भी यहाँ मनाया जाता है। सभ्यता, नैतिकता, धर्म, विश्वास, आस्था की स्पष्ट छाप प्रयागराज में दृष्टिगत होती है। प्रयागराज जिसका पुराना नाम इलाहाबाद के नाम से जाना जाता है।

मेरा अध्ययन इसी संगमनगरी प्रयागराज में शिव कचेहरी व कोटेश्वर महादेव का सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है। जो मेरे स्वयं के द्वारा किये गये सर्वे पर आधारित है। मुझे जो सर्वे में दिखा या मैंने मंदिर को जैसा देखा ठीक उसी तरह वर्गीकृत करने का प्रयास किया है। दिनांक 30.12.2022 को शिव कचेहरी मंदिर का सर्वेक्षण किया गया और देखा कि शिव कचेहरी मंदिर प्रयागराज जिले के शिवकुटी में भोलेनाथ का एक अनूठा शिव मंदिर है। यहाँ भगवान भोलेनाथ पंक्तियों में हैं जिनकी संख्या **286** है।

इस मंदिर में शिवलिंग की स्थापना बिल्कुल न्यायालय जैसी ही प्रतीत होती है जैसा कि चित्र नं01 में शिवलिंग मुख्य न्यायाधीश के रूप में है, जो अन्य शिवलिंग से बड़े हैं।

बड़े शिवलिंग से थोड़ा छोटे अन्य न्यायाधीश की तरह पंक्ति में विराजमान हैं जिस तरह न्यायालय में होते हैं।

किवदन्तियाँ है कि पंक्ति में अधिक संख्या में बने शिवलिंग वकील के रूप में विराजमान है। ये आकार में उपर्युक्त दोनों शिवलिंग से छोटे हैं।

शिव कचेहरी मंदिर के मुख्य न्यायाधीश	**शिव कचेहरी मंदिर के न्यायाधीश**	**शिव कचेहरी मंदिर के वकील**

[9] पुराण– 102 अध्याय से 106 की लाइनें।
[10] पद्मपुराण।

यहाँ जाकर मंदिर के पुजारी से प्राप्त जानकारी से पता चला कि यहाँ पर भगवान भोलेनाथ न्यायाधीश के रूप में विराजमान होकर अपने भक्तों की अर्जी सुनते हैं और उनके बुरे कर्मों की माफी देकर न्याय भी करते हैं। भोलेनाथ का यह अद्भुत मंदिर शिव कचेहरी के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर चारों तरफ से सफेद रंग से रंगी हुई है यह सरकारी इमारत की तरह दिखाई देती है। परन्तु अन्दर जाते ही पंचाक्षर मंत्रों की गूँज से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह अदालत महादेव की है, इसीलिए इसका शिव कचेहरी कहा जाता है। लगभग 150 साल पुराना मंदिर है इसकी स्थापना राणा जनरल पद्म जंग बहादुर ने 1886 में इस मंदिर की स्थापना करवायी। वैसे तो हर रोज पूजा–पाठ आरती का आयोजन होता है परन्तु श्रावण में भक्तों का तांता लगा रहता है।

शिव कचेहरी मंदिर में अपनी गलतियों के निवारण हेतु कान पकड़कर माफी माँगते भक्तगण

यहाँ आने वाले भक्तगणों से बात करने पर पता चला कि जो भी भक्त इस मंदिर में आकर अपने बुरे कर्मों की माफी माँगता है, पापों का प्रायश्चित करता है। शिव जी अपनी कृपा उन पर अवश्य करते हैं।

यहाँ मंदिर में माफी माँगने का अलग तरीका है। जैसे–मुल्जिमों की तरह गुहार लगाते हैं, कोई कान पकड़कर माफी माँगता है, कई उठक–बैठक करके, तो कोई शिवलिंग को पकड़कर गोपनीयता से अपनी बात रखते हैं तो कई भक्त अपनी बाते चिट्ठी में छोड़ जाते हैं। मान्यता है कि यहाँ आने वाले (भक्तों) को न्याय अवश्य मिलता है। शिव जी न केवल न्याय करते हैं बल्कि अपने भक्तों पर कृपा करते हैं।

प्रांगण का छोटा मंदिर

मंदिर के अन्दर भगवान विष्णु जी व लक्ष्मी जी की प्रतिमा

प्रांगण स्थित दूसरा मंदिर

नंदी और शिवलिंग

शिव कचेहरी के बीच में थोड़े ऊँचे स्थान पर एक बन्द छोटा मंदिर है, जिसके अन्दर भगवान विष्णु जी और लक्ष्मी जी की मूर्ति है। बाई तरफ शिव जी, गणेश जी व माता पार्वती जी तथा दाहिनी तरफ सर्प फण के साथ शिवलिंग है, बगल में हनुमान जी की प्रतिमा है।

इसी मंदिर से बाहर की तरफ शिव जी का अन्य मंदिर है। बाहर से दो सीढ़ी चढ़ने पर थोड़ा ऊँचा करके बरामदेनुमा दो पिलर के सहारे बना हुआ खुला स्थान जहाँ नंदी की प्रतिमा बाहर रखी हुई है जिनका मुख मंदिर के अन्दर रखे हुए शिवलिंग की तरफ है। यहाँ यह मान्यता है कि शिव जी का नाम नंदी के कान में बोलकर अपनी कामना करने से जरूर पूरी होती है। अन्दर थोड़े ऊँचे स्थान पर बीच में बड़ा शिवलिंग स्थापित है, शिवलिंग पर ताम्र सर्प फण लिपटे हैं। ठीक उनके बगल पीतल के दो बड़े त्रिशूल रखे हुए हैं यहाँ आने वाले भक्त अपनी मनौती पूरी होने पर पूजा अभिषेक कराते हैं।

कोटेश्वर महादेव

यहाँ से थोड़ी दूर आगे जाने पर कोटेश्वर महादेव का मंदिर है जो पवित्र गंगा नदी के किनारे स्थित है। किवदंती है कि जब भगवान श्री राम लंका से रावण का वध करके महर्षि भारद्वाज से मिले तो उन्होंने उत्तर की ओर गंगा के किनारे सवा कोटि बालू का कण लेकर एक शिवलिंग की स्थापना करने को कहा और बताया कि श्री राम के ऊपर जो **ब्रह्महत्या** का पाप है, वह समाप्त हो जाएगा, तब भगवान श्री राम ने श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को इस शिवलिंग की स्थापना की, महादेव की अद्भुत शिवलिंग जिनको कोटेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है।

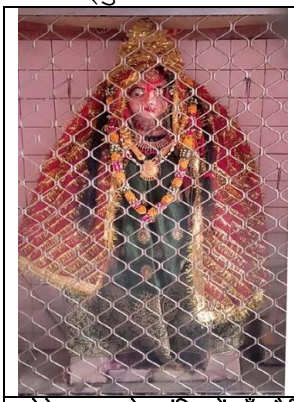

कोटेश्वर महादेव मंदिर में माँ गौरी

कोटेश्वर महादेव

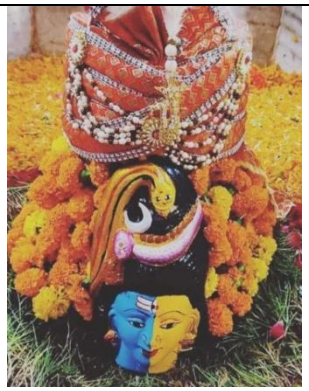

कोटेश्वर महादेव सश्रृंगार

यहाँ आने वाले भक्तों की सभी मनोकामना पूर्ण होती है। सुबह–शाम शिव जी का अद्भुत श्रृंगार होता है। घण्टे की ध्वनि, आरती तथा जय–जयकारे से न केवल कोटेश्वर धाम बल्कि शिवकुटी की गलियाँ भी गूँज जाती है।

मंदिर का प्रवेश द्वार

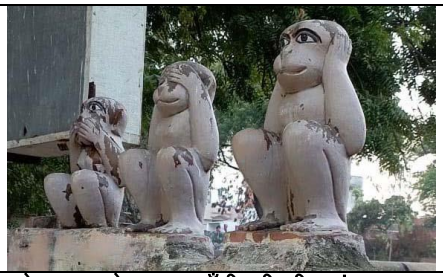

प्रवेश द्वार के अन्दर गाँधी जी तीन बंदर

मंदिर के सम्मुख पंक्तिबद्ध छोटे मंदिर

मुख्य द्वार पर बीच में ब्रह्मा जी, बाई तरफ विष्णु जी, दाहिनी तरफ शिव जी की उभरी प्रतिमा बनी है। अन्दर प्रवेश करते ही दिवाल पर गाँधी जी के तीन बन्दर की प्रस्तर प्रतिमा बनी है। थोड़ा आगे आने पर एक लघु मंदिर है। जहाँ मंदिर के बीच में शिवलिंग जो ताम्र कोटेड़ हैं। बाई तरफ

संगमरमर के नन्दी बाबा की मूर्ति है। बगल में ऊँचे स्थान पर पार्वती की प्रतिमा पीछे की तरफ गणेश भगवान की मूर्ति बायी तरफ कार्तिकेय की मूर्ति है। पंक्ति में आगे बढ़ने पर नन्दी की प्रतिमा बाहर है, अन्दर प्रवेश करते ही बीच में शिवलिंग है। दीवार पर प्रतिमाएँ बनी है, माँ पार्वती जी शेर पर बैठी हैं, वहीं दाहिनी तरफ दीवार पर लक्ष्मी जी–गणेश जी तथा बायीं तरफ दो देवियाँ हाथ जोड़कर खड़ी है।

नंदी प्रभु भोलेनाथ को देखते हुए

भोलेनाथ का शिवलिंग

शेर पर सवार माँ पार्वती

इसी तरह पंक्ति में कुछ आगे–पीछे और मंदिर है जिनमें शिवलिंग नन्दी व अन्य देवी–देवता की प्रतिमा है। आगे खुले में दो यज्ञशाला है जहाँ भक्तगण यज्ञ हवन पूजा पाठ करते है सामने ऊँचे चबूतरे पर पीपल वृक्ष है वहीं पर प्रस्तर के बड़े नन्दी जी तथा संगमरमर के गणेश जी हैं। अब हमारा प्रवेश मुख्य मंदिर में होता है। जहाँ गेट के अन्दर प्रवेश करते ही बाईं तरफ हनुमान जी की प्रतिमा है, दाहिनी तरफ माँ संतोषी की फिर दो बड़ी सीढ़ी ऊपर चढ़ने पर 12 खुले दरवाजेनुमान स्थान नक्कासीदार कई खम्भों से निर्मित है।

पीपल के नीचे गणेश जी

पीपल के नीचे नन्दी जी

मंदिर परिसर में पीपल वृक्ष

परिसर में माँ संतोषी जी

बीच में ऊपर बड़े चैन से लटका हुआ भारी घंटा टंगा हुआ है। नीचे आठ छोटे–छोटे भारी स्टील के दरवाजे से जो जालीदार है उसके अन्दर सुन्दर ताम्र कोटेड शिवलिंग है। ऊपर सर्प फण वो भी ताम्र के बने हैं, बाईं तरफ सफेद पत्थर के गणेश जी, नंदी तथा दाहिनी तरफ माता पार्वती जी और गणेश जी की सफेद पत्थर की मूर्ति है। ठीक सामने की तरफ सुन्दर प्रतिमा माँ गौरी की है। ठीक बगल में नीचे बरामदे की तरफ प्रस्तर के नंदी, शिव जी, पार्वती जी की शिला रखी है। चारों तरफ खुला बरामदा है। मंदिर से गंगा माँ का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। बाईं तरफ चौड़ी–चौड़ी सीढ़ियाँ हैं जो गंगा जी तक जाती है। जब प्रयाग में जल स्तर बढ़ जाता है तो माँ गंगा की लहरें मंदिर की निचली दीवार व सीढ़ियों तक आ जाती है जिसका मैंने प्रत्यक्ष अवलोकन किया है।

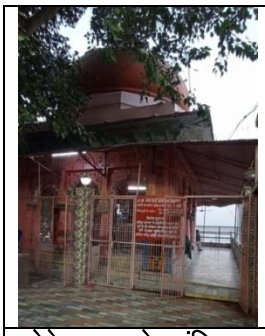	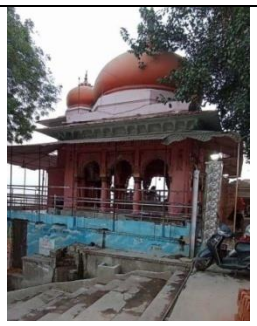	
कोटेश्वर महादेव मंदिर	गंगा की ओर जाती सीढ़ी	सीढ़ी से स्नान के जाते भक्तगण

सुबह भक्त गण गंगा स्नान करके गंगा जल शिवलिंग को अर्पित करते हैं। यहाँ कोटेश्वर महादेव के पुजारी गोस्वामी जी ने बताया कि 'यहाँ यदि कोई भक्त 1 पुष्प शिवलिंग पर अर्पित करता है तो उसे कोटिफल प्राप्त होता है।' श्रावण मास में पूरे महीने बड़ी भारी संख्या में भक्तों की भीड़ होती है। मान्यता है कि यहाँ जो भी भक्त श्रद्धा से आते हैं शिव जी उनकी मान्यता अवश्य पूरी करते हैं। आये दिन यहाँ शिवपुराण, भागवत कथा का आयोजन होता रहता है। जिसकी मान्यता पूरी होती है, वह यहाँ अभिषेक अवश्य करवाता है।

मंदिर से थोड़ी दूर पर **(गुरुकुल) श्री धर्म संघ महाविद्यालय** है। यहाँ के संरक्षक एवं प्रमुख संचालक 'श्री ब्रह्मचारी श्री गुण प्रसाद चैतन्य प्रसाद जी' महाराज से प्राप्त जानकारी इस प्रकार है, 'प्रतिदिन यज्ञों के माध्यम से सृष्टि के कल्याण का केन्द्र रहा है कोटेश्वर महादेव। आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र रहे है, कोटेश्वर महादेव।'

गुरुकुल में पूजन करते पुजारी जी	गुरुकुल में वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते शिष्यगण	गुरुकुल के प्रमुख संचालक

ज्ञान प्राप्ति के साधन में भगवान शिव की कृपा अद्वितीय रही **''ज्ञानामिक्षेतशंकरम्''** भगवान शंकर की कृपा से मूढ़ादि व्यक्ति भी ज्ञान सम्पन्न हो जाता है।

आदि भौतिक आध्यात्म के ऊपर खड़ी हुई एक सीढ़ी यदि जमीन है तो संसार भौतिकता में परिपूर्ण है। नींव के ईंट (नैतिकता) जिस प्रकार दिखलायी नहीं पड़ती परन्तु भवन (बाहरी प्रपंच) की चकाचौंध दिखायी पड़ती है। बिना आध्यात्मिक रूपी दीवारों के जैसे भौतिक भवन का निर्माण सम्भव नहीं है उसी प्रकार सम्पूर्ण दुनिया में भगवान कोटेश्वर महादेव के बिना संगम नगरी का कोई महत्व नहीं है। भगवान के मंदिर के समीप गुरुकुल के बच्चों के द्वारा मंत्रोच्चारण से पूरा शिवकुटी गूँज जाता

है यहाँ आने पर मन आध्यात्मिक लहर से ओत–प्रोत हो जाता है। मन में अद्‌भुत शान्ति की अनुभूति होती है। जिस शरद ऋतु में आम आदमी जूते–चप्पल के बिना नहीं चल सकता। ये नन्हें बच्चे शरद ऋतु में प्रातः 4 बजे उठकर ठण्डे जल से स्नान करके नंगे पाव रहते हैं इनके अन्दर की बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्ति इनको ऊर्जावान व निरोगी रखती है। आम दिनों में यहाँ हजारों की संख्या में दर्शनार्थी (श्रद्धालु) आते हैं, पर श्रावण मास में भक्तों की भारी भीड़ होती हैं। यहाँ आने–जाने वाले दर्शनार्थी (श्रद्धालु) से प्राप्त जानकारी से इस बात का पता चला है कि श्रावण मास में शिव जी की कृपा विशेष होती है। संगम क्षेत्र और श्री कोटेश्वर महादेव के सर्वेक्षण में यहाँ के मठाधीश, पुजारी से सहयोग व जानकारी प्राप्त हुई और स्वयं के द्वारा किये गये अवलोकन के आधार पर मैं अपने लेख को प्रस्तुत कर रही हूँ।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में कहा जाए तो आज प्रत्येक समाज को नैतिकता व आध्यात्मिक मूल्यों, मानदण्डों की आवश्यकता दृष्टिगत हो रही है। किसी भी समाज में नैतिकता व आध्यात्मिकता के विकास से निश्चित ही समाज विकास करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

(1) मत्स्य पुराण –109 से 115
(2) ऋग्वेद– खिल सूक्त– 10.75
(3) पुराण– 102 अध्याय से 106 की लाइनें।
(4) पद्‌मपुराण।
(5) इण्टरनेट से प्राप्त जानकारी
(6) मेरे द्वारा किया गया सर्वेक्षण
(7) मंदिर के पुजारी के द्वारा प्राप्त जानकारी
(8) गुरुकुल के मठाधीश से प्राप्त जानकारी।

❐